नाम : हर्षिल मोदी
स्थान : खुरई (म.प्र.)
E-Mail : harshil.jjmodi@gmail.com
Contact : 9131396458

Scanned with CamScanner

जिनशासन की प्रभावना हेतु वर्तमान में संचालित पाठशालाओं का प्रवाहक्रम

आत्मा; अर्थात मैं, परिपूर्ण हूँ। जाननहार हूँ। अतः अकर्ता हूँ। करनार नहीं हूँ।
यह वस्तु व्यवस्था है। जो अनादि से चली आ रही है। और अनंत तक ऐसी ही चलेगी। जिस जीव ने इस व्यवस्था को समझा, उसका निहाल होगा। और जिसने नहीं समझा, उसका अनादि से जैसा चलता आ रहा है, वैसा चलता रहेगा।

अब प्रश्न हुआ कि इस व्यवस्था का ज्ञान हमको कैसे हुआ। किसने बताया? समाधान रूप समस्त जिनागम साक्षी है। जिन जीवों ने इस तत्व की बात समझकर, आत्म साध कर के, अपना कल्याण किया, और उस केवलज्ञान ज्योति को प्रगट करके सर्वज्ञ संज्ञा प्राप्त की। अपने ज्ञान में यह व्यवस्था प्रत्यक्ष रूप से इनकी। तदुपरांत वह तत्वज्ञान देशना परंपरा वत गणधर-आचार्यों ने जाना। आचार्यों द्वारा वह शास्त्रों में लिपिबद्ध हुआ। उन ग्रंथों का हम पर अनंत उपकार है। परंतु, इस काल का दोष कहो या कर्म का उदय, इन ग्रंथों में से मात्र कुछ ही ग्रंथ प्राप्त है। अन्य सभी काल के गाल में समा गए।
शनैः शनैः काल बीतता गया और प्राप्त वाणी का ही भव्य जीवों ने अध्ययन प्रारंभ किया। और इस बात को जाना कि जिनागम अपार है। यह वर्तमान पर्याय की स्थिति थोड़ी है। अतः

Scanned with CamScanner

प्रयोजनभूत मात्र का ग्रहण ही सार्थक रहेगा।
फिर उन आचार्यों द्वारा रचे गए ग्रंथों का अध्ययन होने लगा। उसके निमित्त से हमें अनेक ज्ञानियों का समागम प्राप्त हुआ, जिन्होंने उस तत्त्वज्ञान को सुगम भाषा में परोसा। परंतु इसका भी कुछ खास लाभ नहीं उठाया गया। वे ग्रंथ भी मात्र दर्शनार्थ ही रहे या अलमारियों में कैद रहे तब 14 वी शताब्दी के अंत में पूज्य गुरुदेव का उदय हुआ। जिनका समागम २० वी शताब्दी में हमें प्राप्त हुआ। और आज भी है। गुरुदेव का हमपर अनंत उपकार है। जो उस शास्त्रस्वाध्याय की पद्धति से उन्होंने हमें अवगत कराया।

अब प्रश्न ही बड़ा पेचीदा था कि उस तत्त्वज्ञान की धारा के प्रवाह को आगे कैसे लेकर जाया जाए। वर्तमान में ~~सच्चे~~ सच्चे देव का एवं सच्चे गुरु का विरह तो सता ही रहा है। धीरे धीरे गुरुदेव को प्रत्यक्ष रूप से सुनने वाला सत्र भी जाने वाला है। मात्र गुरुदेव द्वारा बताया गया तत्त्वज्ञान, उसकी पद्धति, वही हमारे बीच रही है। उस तत्त्वज्ञान को हम

Scanned with CamScanner

आगे कैसे लेकर जाए। इसी अंतर्गत वर्तमान में अनेक प्रयोग, युवाओं द्वारा एवं विद्वानों द्वारा किया जा रहा है। वह सदैव अनुकरणीय है। इस प्रयोग के अंतर्गत पाठशालाओं का ~~xxx~~ गठन हुआ और होता जा रहा है। जिसमें खेल-खेल में, बच्चों को इस तत्व की बात बताई जाती है। इन पाठशालाओं की पद्धति को और सुचारू रूप से चलाने के लिए हमें इस पाठशालाओं का उद्देश्य, पाठशाला अध्यापक की विशेषताए एवं आज के समय में हम क्या तकनीकों से इन पाठशालाओं को और बहतर कैसे कर सकते है, इन बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

पाठशालाओं का उद्देश्य

अरहंत भगवंतों ने, श्री गुरुओं ने करुणा करके हमें यह आत्म कल्याण की बात परोसी है। यह व्यवस्था एवं आत्म साक्षात्कार इतना सरल है जैसे किसी ने खीर का ~~चम्मच~~, मुँह में रख दिया है। अब बस गटकना है। ऐसी सरल व्यवस्था है। तो पाठशालाओं का एक मात्र उद्देश्य आत्मकल्याण का होना चाहिए। यदि आत्मकल्याण के उद्देश्य से पाठशालाओं का गठन हो तब उन पाठशालाओं की सार्थकता है और तभी तत्वप्रचार होगा।

Scanned with CamScanner

अतः आत्मकल्याण को उद्देश्य बनाना चाहिए तत्त्वप्रचार स्वतः होगा।

पाठशाला के अध्यापक की विशेषताएँ

पाठशालाओं में दिया गया ज्ञान, कोई स्व-निर्मित या किसी के द्वारा सुनिश्चित किया हुआ ज्ञान या व्यवस्था तो है नहीं। जो जैसा चाहे, दिया जाए। यह तो साक्षात तीर्थंकर भगवान द्वारा प्रवर्तमान तत्त्व है जो ~~साक्षात तीर्थंकर~~ हम तक पहुँचा है। अतः जरा भी हेर-फेर का होना, बहुत बड़ी विराधना होगी। अतः एक कुशल अध्यापक वही है, जो हर एक बात को सावधानी पूर्वक विचार करके बोले। एवं सर्वप्रथम तीर्थंकर देव को, पश्चात गणधर देवादि आचार्यों को, तदुपरांत गुरुदेव को सर्वोपरि रखकर बात कहे। मूल भाषा को ध्यान में रखकर के बात बताए। हाँ यह बात सत्य है कि आज के समय में बच्चों एवं युवा वर्ग को इन मूल भाषाओं का ज्ञान कम है। फिर भी मूल भाषा में गाथा को पढ़े। तदुपरांत बोल चाल की भाषा में समझाए। जिससे वस्तु व्यवस्था की प्रामाणिकता भी ख्याल में रहेगी। और तत्त्वज्ञान का तत्त्वज्ञान भी रहेगा। आज कल के इस युग में अलग-अलग प्रायोगिक

Scanned with CamScanner

उदाहरणों का प्रयोग कर के यदि बात को प्रस्तुत किया जाए तो बच्चों के दिमाग पर वह बात लंबे समय तक रहती है। एवं उन्हें उनका दृढ़ निश्चय होता है। अतः प्रायोगिक उदाहरणों के माध्यम से अपने विषय को दृढ़ कर सकते हैं।

आज के समय में हम क्या तकनीकों से इन पाठशालाओं को और बहतर कैसे बना सकते हैं?

यह वर्तमान युग, एक तकनीकि युग है। जिसमें विज्ञान ने बहुत तरक्की की है। हर वर्ग-उम्र के लोग इस वैज्ञानिक युग से परिचित है। और अति भाँति वैज्ञानिक यंत्रों के उपयोग से परिचित हैं। अतः इस बात का फायदा लेकर हम इन पाठशालाओं के प्रवाह को आगे लेकर जा सकते हैं।

- Websites के माध्यम से या forum/Portal /applications के माध्यम से कार्य प्रवाह में है ही। अतः उनका लाभ अवश्य लेने की प्रेरणा दें।
- Video Conferencing के माध्यम से आज विदेशों में भी (जहाँ प्रत्यक्ष साधनों का अभाव है।) धर्म प्रभावना, पाठशालाओं, प्रवचनों, कक्षाओं के माध्यम से, बेहद लाभदायक है।
- Power Point Presentations के माध्यम से

Scanned with CamScanner

flow charts के रूप में हम इस तत्वज्ञान को लोगों तक at a glance रूप में समझा सकते हैं।

- आज, जो बुजुर्ग, मंदिर या स्वाध्याय के लाभ से वंचित हैं, वे bluetooth speaker, virtual darshan आदि के माध्यम से उन गतिविधियों में ~~भी~~ सम्मलित हो रहे हैं।
- पाठशालाओं में जिस तिस प्रकार बने, इन तकनीकों का अच्छे से उपयोग करें। चूंकि युवा वर्ग को समझाने के लिए यह एक सुगम साधन है। अत: इसे लाभदायक मानकर, आत्मकल्याण की भावना से लोगों तक इस तत्व को पहुंचाए।

→ इसमें यह बात ध्यान रखें कि यदि कोई प्रश्न करें कि अभी तो हमारा संहनन हीन है। अत: आत्मकल्याण कैसे करें? अत: तत्वप्रचार की भावना रखें। तो उनसे कहा - कि यदि आत्मकल्याण नहीं हो रहा तो आत्मकल्याण प्राप्त करने का पुरुषार्थ करें। जब वह होगा, तब स्वत: ही तत्वप्रचार में सहायक होगा। और पाठशालाओं की इस सुविधा में एक अहम भूमिका निभाएगा।

Scanned with CamScanner